GLOBAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES ISSN: - 2348-0459
www.gjms.co.in
Volume-6, Issue-5, April 017 Impact Factor: 2.389

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिरुचि एवं अभिवृत्ति

डा संगीता श्रीवास्तव
प्राचार्य द्रोणाचार्य अकादमी भिक्षा महाविद्यालय, ढाना, सागर (म.प्र.)

सारांश
वास्तव में मूल्य शिक्षा के लिए विद्यालयी स्तर से प्रयास किये जाने चाहिये, जिससे उच्च शिक्षा के स्तर तक इस मिशन को विस्तृत रूप प्रदान किया जा सके। प्रतिभा पलायन रोकने हेतु शैक्षिक मूल्य अति आवश्यक हैं। विद्यार्थियों को सही, निष्पक्ष, शैक्षिक, उन्नतिपूर्ण वातावरण देकर उनमें शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिरुचि एवं अभिवृत्ति का विकास किया जा सकता है।

शब्दकोश: लोकदुराचार, भौतिकवाद ,भ्रष्टाचार,

प्रस्तावना

वर्तमान शिक्षा प्रणाली अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली की देन है। इसमें भारतीय संस्कृति और शैक्षिक मूल्यों को कोई स्थान नहीं दिया गया। परिणामस्वरूप हम अपनी पहचान खो रहे हैं। दूसरो ओर मूल्यों की कमी से चरित्र संकट पैदा हुआ है। भ्रष्टाचार, अन्याय, हिंसा, अवरोध, धर्मान्धता, लोकदुराचार, भौतिकवाद अनसुलझे तनावों, संघर्षों से भारतीय सामाजिक–शैक्षिक मूल्य प्रतिमान खोखले हो गये हैं।

वास्तव में मूल्य शिक्षा के लिए विद्यालयी स्तर से प्रयास किये जाने चाहिये, जिससे उच्च शिक्षा के स्तर तक इस मिशन को विस्तृत रूप प्रदान किया जा सके। 'भारत की सभ्यता और संस्कृति की श्रेष्ठता व अच्छाइयों को भुलाकर दूसरे देश की सभ्यता और संस्कृति के भौतिक प्रभाव से आकृष्ट होकर उनकी ओर दौड़ना तथा हमारे देश स दूसरे देश की ओर प्रतिभा–पलायन होना राष्ट्रीय मूल्यों में एक बड़े परिवर्तन के संकेत हैं। प्रतिभा पलायन रोकने हेतु शैक्षिक मूल्य अति आवश्यक हैं।

विद्यार्थी सामान्य शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विषयों का चयन इस प्रकार करना चाहता है कि वह अपने जीवन–यापन के लिये उपयुक्त विषयों को चुन सके। वह इस चौराहे पर अपने शिक्षकों एवं अभिभावकों से परिपक्व मार्ग–दर्शन चाहता है। यह मार्गदर्शन तभी संभव है, जब विद्यार्थियों को शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिरुचि एवं अभिवृत्ति का ज्ञान हो। इस हेतु यह परीक्षण सर्वाधिक उपयोगी है।

शैक्षिक मूल्यों की कमी के कारण

हम डॉक्टर, इंजीनियर आदि बनाने के चक्कर में ही रहे, इन्सान तो बना ही नहीं पाये। आज की शिक्षा पद्धति आज के लिए ही अनुपयुक्त है, तो भविष्य के लिए क्या होगी? यह मूल प्रश्न स्वाभाविक है। विज्ञान का प्रयोग कल्याणकारी हो या विध्वंसकारी। शिक्षा का अर्थ यदि संस्कृति का संरक्षण और हस्तान्तरण है, तो इस दिशा में हम कितने आगे बढ़े हैं? इस हेतु मानवता (नागरिकता) की शिक्षा महत्वपूर्ण है। मस्तिष्कीय शोर व अशांति से तनावग्रस्त व्यक्ति इस प्रकार की क्रियाओं में लीन हाते जा रहे हैं। यही कारण है कि आज व्यक्ति की आन्तरिक शांति का प्रश्न भी महत्वपूर्ण होता जा रहा है।

विद्यार्थियों को सही मार्गदर्शन नहीं मिलना :– उच्च शिक्षा में मुकदमेबाजी बढ़ती जा रही है, इसके कारण को दो भागों में बाँटा जा सकता है। एक परोक्ष कारण, जो सामाजिक, राजनैतिक, न्यायिक निर्णयों तथा प्रशासनिक प्रकृति के हैं। दूसरे प्रत्यक्ष एवं तात्कालिक कारण, जैसे नियमों की कमियाँ, लालफीताशाही आदि हैं। जिसमें नियमों की कमियाँ प्रमुखतः दृश्टव्य होती हैं।

ऊर्जावान युवाओं के साथ संकट होता है। उनकी ऊर्जा को सही दिशा न मिले तो वे ध्वंसात्मक कार्य में रुचि लेने लगते हैं। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने नैतिक मूल्य संकट में पाये जाने के विषय में अपनी पुस्तक 'Crises of Character' में लिखा है– ''हम यह जानते हैं कि सही क्या है, हम उसकी सराहना करते हैं, लेकिन उसे अपनाते नहीं हैं, हम यह भी जानते हैं कि बुरा क्या है, हम उसकी भर्त्सना भी करते हैं, फिर भी उसी के पीछे भागते हैं।''

आज का समाज व्यक्तिवादी है। समाज में धन लोलुपता बढ़ी है। एक–दूसरे से आगे निकलने में अच्छे–बुरे का विचार तिरोहित हो गया है। आत्म–प्रवचन, छल–कपट, झूठ–फरेब का बोल–बाला है। आस्थावान, कर्तव्यनिष्ठा उपेक्षित है। ऐसे व्यक्तियों की न तो कोई आवाज है और न ही कोई उनकी बात सुनने को तैयार है। अब इसी समाज से डॉक्टर, वकील, इंजीनियर और हमारे राजनेता आते हैं। इन्होंने समाज परिष्कार की कोई चेष्टा नहीं की। सारा ध्यान व्यक्तिगत हितों की ओर है – क्या इसलिए इन्हें शिक्षा दी गयी थी? क्या औचित्य है, इनकी शिक्षा का? क्या ऐसी शिक्षा से मानवीय गुणों और शैक्षिक मूल्यों से संपूर्ण, स्वस्थ नागरिकों का निर्माण कर सकेंगे? ऐसी शिक्षा से तो अशिक्षा भली। जो अशिक्षित है, कम से कम उनमें नैतिक भाव–बोध तो बचा है। शिक्षा के नाम पर बड़ी–बड़ी उपाधियाँ हैं, पद हैं, प्रतिष्ठा है, बस नहीं है तो केवल वह शिक्षा नहीं है, जो उन्हें संस्कारवान बनाती है, लेकिन इसके पीछे सबसे बड़ा दोषी कौन है ? आदर्शवाद लाना होगा, तभी हम समाज को

व्यक्तिवादी होने से रोक सकते हैं।

विभिन्न पक्षों के अध्ययन के बाद राष्ट्रीय संदर्भ में उच्च शिक्षा के संदर्भ में निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं एवं इसके ऐतिहासिक पक्ष, वर्तमान व भविष्य का अनुमान लगाया जा सकता है। इस निष्कर्ष के आधार पर यह स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा का भविष्य उज्जवल नहीं है। विशेषकर उच्च शिक्षा के संदर्भ में जो नया अर्थशास्त्र उभर रहा है वह गंभीर संकट की चेतावनी है। इन सबसे बचने के लिए भारतीय समाज के वास्तविक मूल्यों, संरचना व उसकी आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा पद्धति की जरूरत ह। इसक लिये अतीत के अनुभव को विकसित देशों की उच्च शिक्षा प्रणाली, अंग्रेजों की वर्तमान शिक्षा पद्धति, अन्य विकासशील देशों के विकासदायी सोच वाली शिक्षा का अध्ययन करने की जरूरत है। शिक्षा को रोजगार परक बनाना अनिवार्य है, लेकिन उसके लिए यह बाजार की वस्तु नहीं बननो चाहिये तथा इस पर मुट्ठी भर लोगों का कब्जा न हो। आम व्यक्ति भी इस शिक्षा को ले सके, गृहण कर सके।

निःसंदेह उपर्युक्त तथ्य की दृष्टि से मानव–जीवन को सही दिशा देने हेतु ग्रामीण या बाहरी छात्र–छात्रायें बाहर में पढ़ना चाहते हैं। जहा उन्हें ग्रामों की अपेक्षा अधिकाधिक पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हो सके, जिसकी चाहत विद्यार्थियों को होती है।

प्रश्नोत्तरी (क्विज), बुद्धि संग्रहण, समस्या समाधान, ग्रह कार्य एवं विभिन्न नवीन प्रविधियों के ज्ञान का उचित प्रयोग कर उच्च शिक्षा में नवाचार लाया जा सकता है। बिना पुनर्निवेशन के शिक्षण कार्य अधूरा रहता है।

उपर्युक्त कार्यो की पूर्ति बाहर की विकसित शिक्षा प्रणाली से ही संभव है। जिसके लिये छात्र–छात्रायें ग्रामीण क्षेत्रों को छोड़कर भाहरी क्षेत्रों की ओर पलायन कर रहे हैं।

शोध की उपयोगिता उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिरुचि एवं अभिवृत्ति विकसित करने हेतु विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास के लिए एवं उनकी शैक्षणिक योग्यता की जानकारी प्राप्त करने के लिए अधिक वैध है। कहा जाता है कि सभी व्यक्तियों में कुछ–न–कुछ हद तक शैक्षिक मूल्य अवश्य पाये जाते हैं। विद्यार्थियों में विद्यमान शैक्षिक मूल्य केवल पुस्तकीय ज्ञान देकर नहीं बल्कि व्यावहारिक ज्ञान देकर विकसित किये जा सकते हैं। विभिन्न स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिरुचि एवं अभिवृत्ति के विकास में तुलना करने से उनके शैक्षिक मूल्यों के विकास का पता चलता है एवं इस जानकारो के आधार पर उनको सही, निष्पक्ष, शैक्षिक, उन्नतिपूर्ण वातावरण देकर उनमें शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिरुचि एवं अभिवृत्ति का विकास किया जा सकता है।

न्यादर्श– न्यादर्श के रूप में सागर जिले के; उच्च शिक्षा के क्षेत्र म अध्ययनरत् 1072 विद्यार्थी (576 बाहरी तथा 496 गामीण विद्यार्थी) 01 विश्वविद्यालय एवं 13 महाविद्यालयों से चयनित किये गये हैं।

समग्र शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिरुचि / अभिवृत्ति का प्रतिशत

समस्त विद्यार्थी	समग्र शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिरुचि	समग्र शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति
1072	97.619:	98.095:

तालिका में समस्त विद्यार्थियों की, समग्र शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिरुचि 97.619: एवं समग्र शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति 98.095: है। ये प्रतिशत समस्त विद्यार्थियों की, समग्र शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिरुचि एवं समग्र शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के प्रति विश्वसनीयता एवं वैधता सिद्ध करते हैं।

प्रतिशत–भेद के आधार पर समग्र शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिरुचि/अभिवृत्ति का पाई ग्राफ

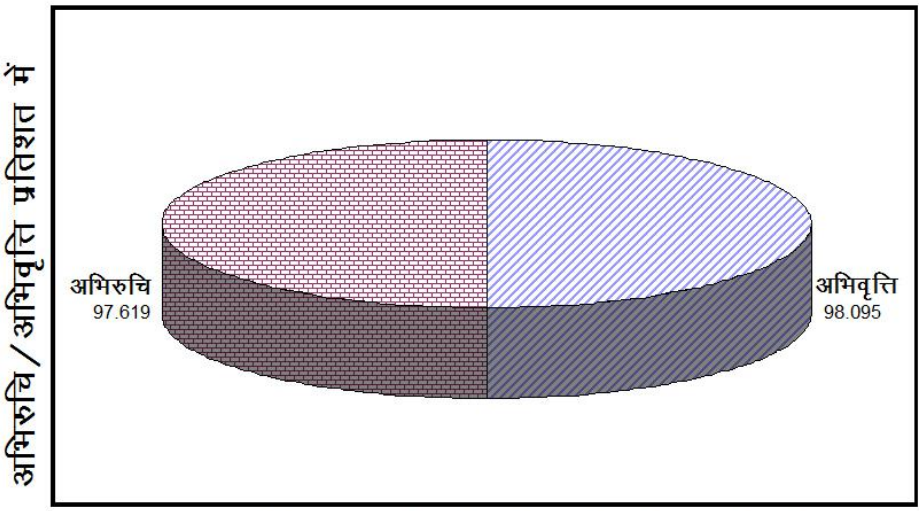

समस्त विद्यार्थियों की, समग्र शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिरुचि एवं समग्र शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के प्रतिशत में सार्थक समानता है, जो उच्च कोटि की है।

जिससे समस्त विद्यार्थियों की, समग्र शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिरुचि एवं समग्र शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर अपेक्षित नहीं के आधार पर परिकल्पना विश्वसनीय एवं वैध है, अतः परिकल्पना मान्य होती है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि विद्यार्थियों को शैक्षिक मूल्यों के प्रति सही दिशा–निर्देशन मिलता रहे, तो वे समाज एवं शिक्षा जगत के कर्तव्य निष्ठ, श्रेष्ठ नागरिक के रूप में उभर सकते हैं।

सुझाव – प्रत्येक शोध अध्ययन और उसके प्रतिवेदन में सुझावों का समावेश एक आवश्यक एवं अंतिम चरण के रूप में स्वीकारा गया है। इसी दृष्टिकोण से शोद्यार्थी ने वर्तमान शोध से संबंधित सुझाव; जो उसे विशेषज्ञों, प्राचार्यों, शिक्षकों, डॉक्टरों, वकीलों, दुकानदारों, महिलाओं, प्रशासकों से विचार–विमर्श के पश्चात् प्राप्त हुये हैं; लिपिबद्ध किये, जो इस प्रकार हैं–

1. युवाओं की शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिरुचि एवं अभिवृत्ति के विकास की प्रक्रिया से शिक्षकों, पालकों, अभिभावकों, मित्रों आदि को अवगत होना चाहिए।
2. मार्गदर्शक को सर्वांगीण व्यक्तित्व, पाठ्य सहगामी क्रियाओं, वर्गानुसार शैक्षिक मूल्यों का निर्माण, विविध योजनाओं का संचालन, परिमाणात्मक के साथ गुणात्मक उन्नयन, प्रत्येक शैक्षिक योजना का क्रियान्वयन हेतु विद्यार्थियों में शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिरुचि एवं अभिवृत्ति विकसित किया जाना आवश्यक है।
3. शिक्षा जगत पर सकारात्मक प्रभाव, समस्त शैक्षिक संस्थानों में प्रस्तुत शोध के परीक्षण की प्रतियों का उपयोग शैक्षिक मूल्यों के विकास में अहम भूमिका निभा सकता है।
4. शिक्षा के लोक व्यापीकरण से विद्यार्थियों में शैक्षिक मूल्य विकसित होंगे।
5. उच्च शिक्षित विद्यार्थियों द्वारा विद्यालयी विद्यार्थियों को समय–समय पर निरीक्षण करके शैक्षिक मूल्यों से अवगत कराना चाहिए।

शैक्षिक मूल्यों संबंधी सुझाव :

1. यदि इसका नाम बदलकर आध्यात्मिक शिक्षा रख दिया जाये तो अच्छा है, क्योंकि धर्म एक नहीं, अनेक हैं और उनके सिद्धांतों व अनुष्ठानों में पारस्परिक मतभेद भी हैं। अतएव सभी धर्मों की शिक्षा देना न संभव है न उपादेय। आध्यात्मिक शिक्षा के अंतर्गत मानव धर्म की शिक्षा समाविष्ट की जा सकती है, जो सब धर्मों की आधार शिला है।
2. इसमें वही सिद्धांत, ग्रन्थ, लेख, उपदेश आदि रखे जाऐं जो सर्वमान्य हों या किसी के विरोधी न हों। इसी प्रकार जो कार्यक्रम रखे जाऐं, जैसे– उत्सव, नाटक, भाषण आदि वे भी इसी प्रकार के सर्वसम्मत हों।
3. निश्चित पाठ्यक्रम, समय विभाग चक्र, पीरियड, परीक्षा आदि के स्थान पर यह शिक्षा विभिन्न प्रकार के दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, वार्षिक, कार्यक्रमों, उत्सवों, दिवसों, महापुरुषों की जयंतियों आदि के रूप में दी जाए और

स्वेच्छा के आधार पर हो अर्थात् भाग लेना अनिवार्य न हो।

4. यह शिक्षा बड़ी आयु के अनुभवी विद्वान और सदाचारी व्यक्तियों द्वारा प्रेमपूर्ण ढंग से रुचिकर पद्धतियों द्वारा प्रदान की जाये।
5. यह शिक्षा तर्क और विचार के आधार से दी जाए और इस आयु में दी जाये जब विद्यार्थी को जीवन का कुछ अनुभव हो जाए, उसकी विचार शक्ति बढ़ जाए।
6. कम आयु के विद्यार्थियों पर इसे लादना और उनमें अंध श्रद्धा और भक्ति पैदा करना अनुचित है।
7. शिक्षा सैद्धांतिक के साथ व्यावहारिक होना चाहिए, जो बातें दैनिक जीवन में उपयोगी नहीं हैं, केवल कल्पना से संबंधित हैं, उन पर समय नष्ट करने की आवश्यकता नहीं है।
8. अच्छी आदतें बनाना, अच्छी रुचियाँ उत्पन्न करना, अच्छे कर्म करने की प्रेरणा प्रदान करना तथा सादा व संयमित जीवन व्यतीत करने की क्षमता प्रदान करना इस शिक्षा का ध्येय होना चाहिए।

राष्ट्रीय उद्देश्यों की प्राप्ति एवं नागरिक गुणों के विकास हेतु शैक्षिक मूल्यों की आवश्यकता स्वतः सिद्ध है। शिक्षा का क्षेत्र अपने आप में इतना व्यापक है कि इसमें उपलब्धियों एवं समस्याओं का आकलन करना, उनके समाधान हेतु अनुसन्धान करना, क्रियान्वयन करना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। यह परीक्षण शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभिरुचि एवं अभिवृत्ति मात्र ही नहीं, वरन् अन्य अनेक अनुसंधानों को अपने गर्भ में संजोये है। जिन पर चिन्तन, मनन, विचार एवं शोध की अनन्य संभावनायें हैं तथा भावी शोधार्थियों को इस हेतु गंभीरता से सक्रिय होना अपेक्षित है।

संदर्भ :–

1. अहलुवालिया, एस.पी. एवं देऊस्कर, महेश, मानवीय मूल्यों की शिक्षा और राष्ट्रीय उत्थान, भारतीय आधुनिक शिक्षा, नई दिल्लीः एनसीईआरटी, जुलाई, 1984।
2. त्यागी, नीता, नतिक शिक्षा, प्रथम संस्करण, आगराः साहित्य प्रकाशन, 2005।
3. दिव्य प्रभानागर, इक्कीसवीं सदी की शिक्षा, स्कूल टुडे, शिक्षा जगत का सजग प्रहरी, वर्ष 3, अंक 8, जनवरी 2000।
4. शिक्षा आयोग की रिपोर्ट 1964–66, शिक्षा और राष्ट्रोय विकास, प्रथम संस्करण (हिन्दी): शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, 1968।